नेपाली साहित्य में आयामिक आंदोलन

बिर्ख खडका डुवर्सेली

बीसवीं सदी के सातवें दशक के प्रारंभ में हिंदी साहित्य में नई कहानी, नई कविता, अकविता, आधुनिक कहानी की चर्चा जब जोर पर थी, तब नेपाली साहित्य में एक नया वाद या प्रयोग 'आयामवाद' के नाम से फलने-फूलने लगा था। दार्जिलिंग में सन् 1963 के अप्रैल महीने में "तेस्रो आयाम" पत्रिका का प्रकाशन बहुत बड़ी साहित्यिक घटना थी। यहीं से नेपाली साहित्य में आयामिक लेखन की विधिवत घोषणा हुई। कवि, कथाकार, कहानीकार, निबन्धकार, आलोचक खेमों में बँट गए। एक बड़ा खेमा आयामिक लेखन का पक्षधर बना और आगे बढ़ता ही गया।

आज से लगभग छह दशक पहले तीन उत्साही ऊर्जावान युवा साहित्यकारों ने "तेस्रो आयाम" (तीसरा आयाम) पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। एक सुनियोजित और परिकल्पित आंदोलन को जन्म दिया, जिसने नेपाली साहित्य में भाषा-शिल्प, विषय-चयन तथा प्रस्तुतिकरण की दृष्टि, सोच में नवीन प्रयोग और विचार को सुनिर्दिष्ट राह दिखायी। यह आयामिक आंदोलन के नाम से विख्यात हुआ। इस आंदोलन ने नेपाली साहित्य में ऐसी जगह दखल किया कि इसका जिक्र किये बिना नेपाली साहित्य का इतिहास पूर्ण नहीं हो सकता है। ये तीन उत्साही ऊर्जावान युवा थे- इन्द्र बहादुर राई, बैरागी काइँला और ईश्वर वल्लभ। इन तीन विभूतियों में केवल बयासी वर्षीय बैरागी काइँला आज भी लेखन में सक्रिय हैं। यहाँ यह उल्लेख करना सांदर्भिक होगा कि बैरागी काइँला की कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रकाशित हो गया है। "बैरागी काइँला की कविताएं" नाम से यह संग्रह उपलब्ध है। इस संग्रह के संपादन का दायित्व मैंने ही लिया है और अनुवादकों में मेरे अलावा काडमांडौ, नेपाल के प्रतिष्ठित विद्वान एवं विदुषी डॉ. रामदयाल राकेश और डॉ. संजीता वर्मा हैं।

यूँ तो समयकाल में, इसके पहले या बाद में नेपाली साहित्य में कई आंदोलन और प्रयोग हुए, जिनमें चर्चित हैं- 'बूट पालिस आंदोलन', 'अमलेख अभिव्यंजना', 'असंतुष्ट जमात', 'सडक-कविता-क्रांति', 'कोलाज अभियान', 'तरलवाद', 'विचलनवाद', 'समावेशी'और 'हस्तक्षेपी' आदि। सभी आंदोलनों में अजीबोगरीब प्रयोग परोसे गए। सरल सवालों की खोज में बहस के जटिल मुद्दे उठाए गए, पर सब आए-गए हो गए। लेकिन आयामिक आंदोलन की छाप गहरी पड़ी क्योंकि आंदोलन के फलस्वरूप लेखन संसार में उथल-पुथल ही मच गई। साहित्य लेखन में अध्ययन-मनन-चिंतन के प्रभाव और प्रतिफलन परिलक्षित होते गए। नई जमातों ने लेखन की नई जमीन खोज ली, नए पाँव पसारे, राग भी बदलने लगे, विविधता के साथ नवीनता का समावेश हुआ। कृतिकारों के स्वर और सुर भी बदलते गए।

जब कवि बैरागी काइँला और ईश्वर वल्लभ की कविताएं चर्चित होती गयीं तो आयामवादी लेखन में आयामों की चर्चा होने लगी जिसके फलस्वरूप समकालीन कविताएं परंपरावादी रूढ़ मान्यता की पटरियों से

निकलने लगीं और रचना-प्रक्रिया में व्यापक बदलाव दिखने लगा। कवियों और कहानीकारों के नज़रिए बदलते गए। विश्व में हो रहे बदलाव के समरूप दृष्टियां वैश्विक होती गयीं। स्वभावत: रूढ़ बिम्बों का प्रयोग थमता गया, तुकबंदी बंद हो गई और कविताओं में दूर दृष्टि नजर आने लगी। इतना ही नहीं, प्रतीक-योजना और मिथक-प्रयोग, बिंब-विधान तथा विषय-चयन में तब्दीलियां ही नहीं आयीं बल्कि नए आकाश और नयी धरती की खोज भी होने लगी।

दूसरी तरफ आख्यान लेखन में इन्द्र बहादुर राई ने भाषा और विचार के विस्तार को साहित्य में तवज्जो दी और स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर जाने की राह में पूर्णता दिखायी। एक से बढ़कर एक कहानियां लिखकर उन्होंने जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियों में छुपी या दबी संपूर्णता को उजागर करने का बीड़ा ही नहीं उठाया बल्कि खुद को लेखन में संपूर्ण और सशक्त होने के सबूत भी दिए। रचना-विधान के बदलाव के साथ रूढ़िगत मानदंडों में परिवर्तन लाकर सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं से जुड़ी संवेदनाओं को लेखन में मान्यता देना ही उनके लेखन का लक्ष्य और सार है। इन्द्र बहादुर राई आधुनिक या उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य में मूर्धन्य कथाकार एवं समालोचक हैं। समीक्षा की उनकी कृति 'नेपाली उपन्यासका आधारहरू' के लिए उन्हें सन् 1977 में साहित्य आकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

कविता के क्षेत्र में बैरागी काइँला (असली नाम तिलविक्रम नेम्वाङ) और ईश्वर वल्लभ ने परंपरागत रूढ़ मान्यताओं को नकारा और नई मान्यताएं स्थापित करके अपने अनुगामियों के लिए नए रास्तों का निर्माण किया। 'तेस्रो आयाम' पत्रिका के अगस्त-सितंबर, 1963 के अंक के संपादकीय में अपना पक्ष रखते हुए कवि काइँला ने लिखा है- "आयामिक लेखन यह विश्वास रखता है, बीसवीं शताब्दी की अस्त-व्यस्तता तथा जटिलता पुराने लेखन के ढाँचे के भीतर समाहित नहीं होती है.....आयामिक लेखन की आस्था है- आधुनिक लेखन से ही आधुनिक मनुष्य की जिंदगी से संलग्न अभिव्यक्ति प्रस्फुटित होती है।" कवि का मानना है कि- "विचार पक्षाघात की मार पड़े हाथ हो गए हैं/ मैं कुछ न होने जैसा ही हो गया हूँ।"

कवि काइँला की कविताओं का पाठक और अनुवादक तथा कविता-संग्रह के हिंदी अनुवाद का संपादक होने के नाते इतना कहने का हक मेरा बनता है कि कविताएं सरल तथा सहज नहीं हैं और विश्व के विख्यात दर्शनशास्त्रियों और चिंतकों की वैश्विक जीवन-दृष्टि और सभी धार्मिक मान्यताओं और आस्थाओं से परिपूर्ण हैं, साथ ही भाषा में प्रचुर क्लिष्टता और जटिलता भी है।

कवि काइँला और ईश्वर वल्लभ की कविताओं में ऐतिहासिक कालखंडों से आज तक के जीवन-संघर्ष की परत-दर-परत खोज है ताकि जीवन का तात्पर्य समझ में आए।

"वह संघर्ष जो शिलाखंड में चिपकता है/ वह स्वतंत्रता जो पत्थर में उकेरी जाती है/ वह मनुष्यता जो परत-दर-परत सदियों से लूटी जा रही है।" ('प्लांचेटको टेबुल'- बैरागी काइँला)

"कंधे पर सिर झुलाते हुए/ इस सड़क पर चलते हैं/ घसीटकर चलते हैं इन्हें/ बिना चेहरे के मनुष्य/ अंधेरे के पैर रोपकर/ रात रात भर इस सड़क पर / फलत: आज सड़क घट गयी है/ चुराता है कौन सड़क के किनारों को?/ सड़क क्यों घटती है/ प्रत्येक रात के आगमन के साथ।"(मातेको मान्छेको भाषण:मध्य रात पछिको सडकासित---बैरागी काइँला)

"मृत्यु, आज जिंदगी के करीब होकर गयी।/ छोटी दुर्घटना को छुट्टे पैसे से खरीद न पाकर ।/ मृत्यु , आज जीवन के बाजार-भाव/ का पता लगाकर गयी।" (बैरागी काइँला)

"चट्टान पर ले जाकर फेंक दो/ यह दूब की जड़/ कुछ दिन प्रतीक्षा करो/ देखो, वहीं पनपती है।"

(बंद कुहिरोमा नानीको पाइला - ईश्वर वल्लभ)

"नए जन्म लेने वालों की/ प्रतीक्षा कर रहा हूँ/ बूढ़ा पेड़/ देख रहा हूँ मैं/ हाइड्रा के सिर गिन रहा हूँ!"

(आयतन एक टुक्रा जिंदगी- ईश्वर वल्लभ)

'संदर्भ ईश्वर वल्लभका कविता' की समीक्षा करते हुए इन्द्र बहादुर राई ने ईश्वर वल्लभ की कविताओं के संदर्भ में आए सैद्धांतीकरण का क्रमबद्ध विवरण देने की सफल चेष्टा की है और अनुभूति के अनुरूप लिखने की बात का जिक्र करते हुए कविता में 'सम्पूर्णता' और 'वस्तुतता' भरपूर परोसने का खुलासा भी किया है। वस्तुतता भी स्थिति है जीवन और कला की। आयामिक लेखन के आख्यानकार इन्द्र बहादुर राई का के अनुसार वस्तुतता देखने की दो विधियाँ हैं- प्रत्यक्षता की विधि और परोक्षता की विधि।

'तेस्रो आयाम' के मई 1963 अंक के संपादकीय में आयामवाद की वकालत में राई ने कहा है कि- "अब साहित्य लेखन में मनुष्य की संपूर्णता को उठाने के लिए देखना होगा कि मनुष्य आँख मात्र, कान मात्र, मन मात्र नहीं है। वह सब इन्द्रीय, हृदय, मस्तिष्क का पुंज है और अब लिखे जाने वाले वाक्य और पंक्ति में उसकी संपूर्णता को पकड़ना होगा। ऐसा करके ही हम अपनी प्रत्येक कृति को तीसरे आयाम में ला सकेंगे।"

विभिन्न कृतियों में अभिव्यक्त विचार तथा अंतर्वार्ताओं में बातों को आयामिक लेखन के संबंध और संदर्भ में अध्ययन और विश्लेषण करने पर डॉ. राई के स्पष्टीकरण में ये तथ्य उभरकर आते हैं:

- आयामिक साहित्य सिद्धांत की विवेचना है।
- आयामिक साहित्य अमूर्त साहित्य में पहुँचा है।
- दु ख:पाने वाले आदमी की कथा या कविता उस एक आदमी के दुख की कथा या कविता में मात्र : सीमित न रहे। उससे भी ऊपर उठकर उसमें विशाल दर्शन हो, एक दर्शन का आकाश फैले, एक अंश राजनीति भी रहे और सामाजिक भाष्य बने। यह 'केवल' से 'बहुत' कुछ हो। यही तीसरा आयाम है।
- सामाजिक लेखन को 'आंदोलन' मात्र कहना, प्रयोग मात्र कहने जैसा ही मनचाहा नहीं लगता है।

- हमें विश्वास है, आयामिक लेखन के भीतर ठोस चीज है। देने योग्य कोई 'वस्तु' है।
- प्रत्यक्षण और अनुभूति हम एक 'तत्क्षणता' में बोध और अनुभूत करते हैं।
- आयामिक लेखन ने चित्रकला से प्रशस्त सहायता ली है।
- अभिव्यक्ति और दर्शन से ऊपर उठना हमारा लक्ष्य है।

आयामवाद के परिणाम के रूप में परोसे गए साहित्य के विभिन्न पक्षों को उकेरकर की गयी असंख्य चर्चा-परिचर्चा तथा समालोचना को गौर से विचार करने पर और सूक्ष्म विश्लेषणों का अध्ययन करने पर ऐसा भी लगता है कि आयामिक लेखन के तीनों प्रवक्ता या प्रवर्तक अलग-अलग दिशा की ओर निकल पड़े हैं, तो कभी लगता है वे सम बिंदु हैं। जो भी हो यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि आयामिक आंदोलन ने नेपाली साहित्य के लेखन में समय-सापेक्ष नए रास्ते की खोज की है, जिसके फलस्वरूप साहित्य-सृजन में नए नियम निर्धारित होने लगे और चिन्तन और लेखन की दिशा में नए मानदंड का निर्माण भी हुआ। संभवत: इसी कारण तीसरे आयाम के प्रवर्तकों और उनके अनुयायी लेखकों और कवियों की कृतियों में भिन्न और अलग साहित्यिक विशिष्टता परिलक्षित होती है और नए कलात्मक मूल्य स्थापित होते हैं।

आयामवादी प्रवृत्ति के समर्थक और अनुयाइयों की कृतियों में निरंतर गद्य या पद्य लेखन कभी पुरानी रुढ़िग्रस्त मान्यता के पक्ष की ओर नहीं गया। वह उत्तरोत्तर आगे की ओर बढ़ता ही गया। अंततोगत्वा यह कहना ही सर्वथा उचित होगा कि समय के साथ ही साहित्य की विधाएं नए रूप और रंग में सजती संवरती गयी, जिसमें नयी चीज की खोज चलती रही। संभवत: यही नयी खोज नेपाली साहित्य संसार के लिए आयामिक लेखन है।

(**लेखकीय परिचय:** *लेखक नेपाली साहित्य के चर्चित साहित्यकार एवं गंभीर अध्येता हैं। नेपाली-हिंदी के सेतु के रूप में बिर्ख खडका डुवर्सेली की उपस्थिति बहुत ही उल्लेखनीय है।*)

***